महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम की पी.एच.डी की उपाधि के लिए
प्रस्तावित शोध विषय की अंतिम रूपरेखा

समकालीन कविता के संदर्भ में अरुण कमल की कविताएँ

कविता मनुष्य की अनुभूति को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करने का माध्यम है। मनुष्य की ज़िन्दगी की सूक्ष्म अनुभूतियों का प्रस्फुटन कविता का मार्ग है। कविता का लक्ष्य मात्र मनोरंजन और उपभोग ही नहीं, वरन् विद्रोह और बदलाव के पक्ष में भी वह खडी हो जाती है। अतः प्रत्येक काल में कविता का परम धर्म मनुष्यता का संरक्षण एवं संवर्द्धन करना है। हिन्दी कविता भी हर युग में मानव की अनुभूति एवं युगीन सच्चाई को उद्घाटित कर आगे बढ़ रही है। सन् उन्नीस सौ साठ के बाद हिन्दी में लिखी जानेवाली कविता 'समकालीन कविता' नाम से जानी जाती है, जिसमें वर्तमानकालीन भारत का यथार्थ एवं दर्दनाक चित्रण विवृत हो जाता है। समकालीन हिन्दी कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता की तुलना में मनुष्य की अनुभूति एवं ज़िन्दगी के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कविता है।

आज का जीवन पहले के जीवन से ज्यादा कठिन और संकीर्ण हो रहा है। मानव जीवन जितना संकीर्ण बनता जा रहा है, उतना ही उसके जीवन की व्याख्या करनेवाली कविता भी भाव और अभिव्यक्ति दोनों स्तरों पर संकीर्ण हो ही जाएगी। इस कारण से ही हिन्दी की समकालीन काव्यधारा आम आदमी के जीवन की संकीर्णताओं तथा विषमतापूर्ण संवेदनाओं को अपनाती हुई अग्रसर हो रही है। अतः हिन्दी की समकालीन कविता की

कैमरा अपने परिवेश में लड़ते-मरते, तड़पते-गरजते चेहरा-विहीन आम-आदमी को 'फॉकस' करती है। अपनी रचनात्मक ऊर्जा, मानवीय संवेदना, युगबोध, विषय विस्तार आदि के फलस्वरूप समकालीन हिन्दी कविता अपनी पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से अलग अस्मितावाली दीख पड़ती है। व्यक्ति मन के आन्तरिक संघर्षों के साथ ही साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण भी समकालीन कविता में खूब पाया जाता है।

वर्तमान कालीन समाज में जितनी विसंगतियाँ, विकृतियाँ एवं जटिलताएँ उभरकर आई हैं इन के कारण आज का जीवन भी नकली एवं असह्य बन गया है। समकालीन कविता आज के जीवन की इन विषमताओं एवं विसंगतियों के खिलाफ़ प्रतिरोध का स्वर उठाती है। समकालीन हिन्दी कविता को नई दिशा एवं नूतन दृष्टि प्रदान करनेवाले कवियों में अरुण कमल का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म १५, फरवरी, १९५४ ई में बिहार के रोहतास जिले के नासरीगंज गाँव में हुआ था। वे पटना विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के प्रोफसर हैं। अब तक उनके चार काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं—'अपनी केवल धार', 'सबूत', 'नये इलाके में' और 'पुतली में संसार'। 'कविता और समय' और 'गोलमेज़' उनकी गद्य रचनाएँ हैं। 'कथोपकथन' उनके साक्षात्कारों का संकलन है। कविता केलिए उन्हें भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार (१९८०), सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार (१९८९), श्रीकान्त वर्मा स्मृति पुरस्कार (१९९०), रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (१९९६), शमशेर सम्मान (१९९७) तथा 'नये इलाके में' कविता संग्रह केलिए १९९८ का साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। ब्रजविले (कांगो) में आयोजित आफ्रो एशियाई युवा लेखक सम्मेलन में वे भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। उन्होंने रूस, चीन तथा

इंग्लैंड़ की साहित्यिक यात्राएँ भी की हैं। उर्दू तथा पंजाबी के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कविताओं का अनुवाद भी हुआ है।

अरुण कमल आज़ाद हिन्दुस्तान के ऐसे नाराज़ नवयुवक की कविता लिखते हैं जिसमें व्यवस्था के खिलाफ़ तीव्र विरोध के साथ-साथ सामाजिक विषमता पर भी तीखा प्रहार है। ठेठ स्थानीयता का बोध उनकी काव्य भाषा की सबसे बड़ी खूबी है। यह ठेठ स्थानीयता न केवल उनकी काव्य-भाषा को समृद्ध कराती है, बल्कि ज़िन्दगी की हकीकत को काव्यात्मक संवेदना में ढ़ालने में समर्थ भी होती है। मध्यवर्गीय और निम्नमध्यवर्गीय जीवन की बारीक पकड़ अरुण कमल की कविताओं की उल्लेखनीय विशेषता है। जीवन की अभावग्रस्तता, बेबसी और शोषण-प्रक्रिया से कवि अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। कवि की छटपटाहट और आकुलता युग की कड़ुवाहट का सबूत है। अपनी कविताओं के द्वारा कवि ने हमारी नपुंसकता और संवेदनहीनता पर कई जगह प्रश्न चिह्न लगा दिया है। अरुण कमल की कविता में अनुभूति और विचार का सामंजस्य हुआ है। उनकी कविताओं का मुख्य स्वर राजनीतिक चेतना का विस्फोट नहीं है, बल्कि इस कठिन समय में व्याप्त क्रूर अमानवीयता से उपजी करुण मानव गाथा है। अरुण कमल सच्चे अर्थ में एक प्रतिबद्ध जीवनधर्मी कवि हैं। उनकी कविताओं में अपने को तथा अपने समय व समाज को लगातार खोजने और व्याख्यायित करने की कोशिश हुई है। उनकी कविताओं की एक अलग खासियत यह भी है कि उनमें पूरी दुनिया के प्रति इन्सानी सरोकार तथा मानवीय संसक्ति मौजूद हैं । इस अर्थ में यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि कबीर से शुरु होकर निराला और मुक्तिबोध एवं धूमिल तक पहुँची एक गरिमामयी काव्य परंपरा को आगे बढ़ाने का महान श्रेय अरुण कमल का ही है। उनकी कविताओं पर समय-समय पर कहीं-कहीं आलोचना-टिप्पणी लिखी जाती रही है। लेकिन उनकी कविता पर जितना लिखा गया है, वह पर्याप्त नहीं है। यद्यपि, अरुण कमल

की कविताओं पर यत्र-तत्र कुछ शोधकार्य हुए हैं तो भी हिन्दी की समकालीन कविता के संदर्भ में उनकी कविताओं का कोई समग्र अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। अतः समकालीन हिन्दी कविता के अध्ययन के संदर्भ में अरुण कमल की कविताओं को विशेष रूप से उल्लिखित करना अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य भी है। इस आवश्यकता की पूर्ति में हमारा यह अध्ययन—**'समकालीन कविता के संदर्भ में अरुण कमल की कविताएँ'**-- एक विनम्र प्रयास होगा, यही उम्मीद है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध **'समकालीन कविता के संदर्भ में अरुण कमल की कविताएँ'** पाँच अध्यायों में विभाजित हैं। **'समकालीन हिन्दी कविता : एक विश्लेषण'** नामक प्रथम अध्याय में 'समकालीन' शब्द पर विचार करते हुए समकालीन कविता की विभिन्न परिभाषाओं पर प्रकाश ड़ाला गया है। 'समकालीनता' की समयपरक दृष्टि और संवेदनात्मक दृष्टि की ओर यहाँ संकेत किया गया है। समकालीन कविता के विभिन्न आन्दोलनों का उल्लेख भी यहाँ हुआ है। तदुपरान्त समकालीन कविता की प्रमुख काव्यधारा 'जनवादी चेतना वाली कविता' पर विचार करते हुए समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियों तथा प्रमुख समकालीन कवियों का उल्लेख भी दिया गया है। इस अध्याय के अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि समकालीन कविता के दर्शन 'जनवादी चेतना' पर आधारित है और उसके केन्द्र में 'मानव' है।

'अरुण कमल का रचना संसार' शीर्षक दूसरे अध्याय के प्रथम भाग **'अरुण कमल की जीवन यात्रा- एक परिचय'** में कवि अरुण कमल के वैयक्तिक जीवन के विभिन्न आयामों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उनके बचपन तथा काव्य रचना के प्रेरणा स्रोत, उनके प्रिय

साहित्यकार एवं रचनाएँ, मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति झुकाव तथा अपनी रचनाओं की जनपक्षधरता आदि बातों पर यहाँ चर्चा की गई है। अरुण कमल के 'कवि-व्यक्तित्व' को पूर्णतः समझने हेतु आपके साहित्यिक निबन्धों, वक्तव्यों तथा साक्षात्कारों के साथ उनकी अनूदित रचनाओं का भी अनुशीलन इस अध्याय में किया गया है। इसमें अरुण कमल की समकालीन तमाम सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का अनुशीलन भी किया गया है। इस अध्याय के दूसरे भाग **'अरुण कमल की काव्य रचनाएँ'** में अरुण कमल के अब तक प्रकाशित चारों काव्य संकलनों की कविताओं को निकट से देखकर विश्लेषित करने की कोशिश की गई है।

'अरुण कमल की कविता के वैचारिक एवं अनुभूति पक्ष' शीर्षक तृतीय अध्याय में अरुण कमल की कविताओं के संवेदनात्मक एवं वैचारिक पक्षों पर विचार किया गया है। वैयक्तिक अनुभूतियाँ, प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य में संघर्ष का दिग्दर्शन, ठेठ स्थानीयता एवं लोकचेतना, पर्यावरण प्रदूषण के प्रति चेतावनी, पीड़ित नारियों के प्रति हमदर्दी, हाशिए पर पड़े दलितों की वास्तविक समस्याओं का उल्लेख, थके-हारे मज़दूरों के प्रति सहानुभूति आदि उनकी काव्य संवेदना के तमाम पक्षों की सही पडताल यहाँ की गई है। वर्तमान राजनीतिक साजिश का पर्दाफाश करने हेतु कवि ने कभी-कभी व्यंग्य का सहारा भी लिया है, जिसका भी यहाँ उल्लेख हुआ है। अध्याय के निष्कर्ष के रूप में 'समकालीन कविता' के संदर्भ में अरुण कमल की काव्य संवेदनाओं की तमाम विशेषताओं को भी उजागर किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'अरुण कमल की कविता में भाषा एवं शिल्प'** है, जिसमें सपाटबयानी से युक्त उनकी काव्य भाषा की महत्वपूर्ण खूबियों और अभिव्यक्ति की अनुपम शैलियों पर विचार किया गया है। अपनी काव्य भाषा के सम्बन्ध में अरुण कमल का अपना मत भी यहाँ

दिया गया है। भोजपुरी, मगही आदि स्थानीय भाषाओं के साथ ही साथ उर्दू तथा अंग्रेज़ी के प्रति कवि के दृष्टिकोण को भी यहाँ उजागर किया गया है। अधिक से अधिक को कम से कम शब्दों में कहने की रीति, छंदों के प्रति कवि का विचार, गद्यमयी काव्यभाषा आदि पर यहाँ विचार किया गया है। कवि के द्वारा प्रयुक्त लोक-चेतनावाले नवीन एवं ताज़े बिम्बों एवं प्रतीकों का भी यहाँ उल्लेख हुआ है जिनके द्वारा अन्य समकालीन कवियों के बीच अरुण कमल एक विशेष स्थान हासिल कर पाते हैं।

पाँचवाँ अध्याय शोध प्रबन्ध का **उपसंहार** है। इसमें अरुण कमल की काव्यगत उपलब्धियों पर दृष्टि ड़ालते हुए समकालीन कविता को उनकी देन के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। प्रस्तुत अध्याय में अरुण कमल की कविता की सामयिकता एवं उनकी रचनाधर्मिता के महत्व को भी उजागर करने की कोशिश की गई है। इसके पश्चात् कवि अरुण कमल से लिए गए साक्षात्कार को भी संलग्न किया गया है। अरुण कमल की कविताओं पर विचार करते समय कुछ महत्वपूर्ण सवाल मेरे मन में उठे थे। उन सवालों को लेकर कवि से की गई बातचीत उन पर और भी विस्तार से अध्ययन करनेवालों के लिए शायद उपयोगी साबित होगी। अरुण कमल के चारों काव्य संकलनों की कविताओं में ऐसे मौलिक चिन्तन, विचार, मत, प्रतिपत्तियाँ और संकेत हैं कि उनमें से कवि की लोकधर्मिता तथा उनके काव्य प्रतिमान के अनेक आयाम उभर आते हैं। अरुण कमल के लिए कविता 'कठिन समय की अभिव्यक्ति' है। उनके प्रथम काव्य संकलन 'अपनी केवल धार' में लोकचेतना के साथ नास्टेल्जिया, सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक विषमताओं के खिलाफ चलते विद्रोहों से विशेष लगाव, पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सतर्कता, विस्थापन की भीषण समस्याओं की मार्मिक अनुभूति, सर्वहारा तथा हाशिए पर पडे मज़दूरों के प्रति गहरी हमदर्दी, जातीय संघर्षों का दुष्परिणाम, गरीबी की भयानकता, पीडित व शोषित नारी वर्ग के प्रति संवेदना, मीडिया की अपसंस्कृति

आदि का चित्रण हुआ है। अरुण कमल का दूसरा काव्य संग्रह 'सबूत' वास्तव में वर्तमानकालीन भारतीय समाज का स्पष्ट मिसाल ही है। उनके तीसरे काव्य संकलन 'नये इलाके में' की कविताएँ भाव तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से अन्य संग्रहों से अलग दीख पड़ती हैं। चौथे काव्य संकलन 'पुतली में संसार' की कविताओं में मानव मन के अन्र्दद्वन्द्व, वर्तमान युग की भयानकता, शहरों की भीड़ तथा तनावपूर्ण ज़िन्दगी, गाँव के निरीह लोगें की गरीबी, प्रकृति एवं लोकचेतना, माओ त्से तुंग जैसे विदेशी नेताओं के प्रति झुकाव, दोस्ती की पवित्रता, स्वतन्त्रता के बाद के नेताओं का मनमानी व्यवहार आदि का खुला चित्रण किया गया है।

अरुण कमल की कविता मनुष्यता के लिए संघर्ष करनेवाली कविताओं में शामिल है। भूमंडलीकरण के दौर में छायी अपसंस्कृति के खिलाफ़ लोक-चेतनावाली रचनाओं के ज़रिए कवि ने प्रतिरोध की एक सशक्त दीवार खडी कर दी है। अर्थात् अरुण कमल अपनी कविता के केन्द्र में मुक्ति के लिए लड़ने वाले आदमी को खड़ा कर देते हैं। प्रगल्भता, वाचालता, चीख, पुकार, भद्देपन आदि समकालीन कविता पर लगाए सामान्य आरोपों से अरुण कमल की कविता सर्वथा मुक्त है। अंत में इस निष्कर्ष पर हम पहुँचते हैं कि निर्बल की वाणी को अपने में समाहित करके अरुण कमल की कविता अपने लिए एक पूरे मनुष्य की खोज करना चाहती है। अरुण कमल की कविताओं को सही ढ़ंग से समझने और समकालीन परिस्थितियों में उनकी उपादेयता को परखने की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन **"समकालीन कविता के संदर्भ में अरुण कमल की कविताएँ"** सार्थक सिद्ध होगा, यही उम्मीद है। अरुण कमल जैसें संवेदनशील कवि की रचनाधर्मिता को परखने के लिए यह अध्ययन पृष्ठभूमि है, जो शोध की अनन्त संभावनाएँ जगाने में भी सहायक होगा।

Name of the Institution where the Research Programme will be Undertaken	: Post Graduate & Research Department of Hindi Catholicate College Pathanamthitta.
Name & Signature of the Research Student	: Rajesh Kumar P.N.

NAME OF THE RESEARCH TOPIC

SAMAKALEEN KAVITA KE SANDARBH MEIM ARUN KAMAL KI KAVITAYEN

समकालीन कविता के संदर्भ में अरुण कमल की कविताएँ

Name & Signature of the Research Supervising Teacher

Dr. Babu Joseph M.A., Ph.D

Associate Professor & HOD

Department of Hindi

K.E.College Mannanamm, Kottayam

Research Supervising Teacher,

Mahatma Gandhi University,Kottayam.